ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

बीकानेर शहर में स्कूली शिक्षा का विकास

डॉ. गीता चौधरी (अर्थशास्त्र),राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,बीकानेर

शोध सार

प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में शिक्षा प्रथम प्राथमिकता की वस्तु है। यह पहली सीढ़ी है, जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंचता है। राष्ट्रीय जीवन के साथ जितना घनिष्ठ संबंध शिक्षा का है उतना अन्य किसी वस्तु का नहीं हो सकता। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सब व्यक्तियों की शिक्षा अथवा जनसाधारण की शिक्षा ही राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है। अतः इसका उत्थान करके ही हमारे देश का कल्याण हो सकता है। इस प्रसंग में स्वामी विवेकानन्द का अग्रलिखित वाक्य सत्य से भरपूर है :–

''मेरे विचार से जनसाधारण की अवहेलना महान् राष्ट्रीय पाप है और हमारे पतन के कारणों में से एक है। सब राजनीति उस समय तक विफल रहेगी, जब तक कि भारत में जनसाधारण को एक बार फिर भली प्रकार शिक्षित नहीं कर लिया जाएगा।''

राष्ट्र की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को सुधारने में शिक्षा की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा ज्ञान की वृद्धि के साथ–साथ मनुष्य की विश्लेषण क्षमता तथा आत्मविश्वास को बढ़ाकर उसे सशक्त बनाती है।

शिक्षा का अर्थ पाठ्यपुस्तकें पढ़कर परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं है अपितु वास्तविक अर्थो में शिक्षा – क्षमता, कौषल और मूल्यों में अभिवृद्धि का नाम है। इस तरह शिक्षा व्यक्तिगत प्रगति के साथ एक उन्नत समाज व राष्ट्र के निर्माण में सहयोग देती है। प्रसिद्ध समाज सुधारक व शिक्षाविद् जॉन डूयी के शब्दो में :–

''शिक्षा जिन्दगी की तैयारी नहीं है, शिक्षा खुद जिन्दगी है।''

"Education is not preparation for life, education is life itself."

शिक्षा का मानव जीवन में अत्यधिक महत्व है शिक्षा को जीवन से पृथक नहीं किया जा सकता यदि प्रगति ही जीवन है तो शिक्षा इस प्रगति को उचित दिशा में नियन्त्रित एवं संचालित करती है। शिक्षा का क्षेत्र अति विस्तृत है। शिक्षा उस विकास का नाम है जो बचपन से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक चलती है। इसी विकास के कारण व्यक्ति अपनी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करता है, जीवन की विभिन्न समस्याओं को सुलझाता है और अपने कर्तव्यों का पालन करता है। इस विकास के बिना मानव जीवन सफल नहीं होता और बिना सफल मानव जीवन के कोई समाज विकास नहीं कर सकता।

शिक्षा का मानव जीवन में अत्यधिक महत्व है इसीलिए हमारी सरकार का भी नारा है – **अंगूठा टेक रहे ना एक** ताकि शिक्षा के द्वारा मानव अपनी सांस्कृतिक धरोहर को आगे आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित कर सके शायद इसीलिए कहा गया है – **सीखे व्यंजन जाने स्वर, आखर जाने हर घर**।

प्रस्तावना

हमारे आने वाले कल की चिन्ता का दूसरा नाम ही 'भविष्य के लिए षिक्षा' है। भविष्य की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए हमें आज की पीढ़ी को तैयार करना होगा। इसके लिए षिक्षा के स्वरूप में बदलाव जरूरी है। विष्व–शक्ति, भाई चारे, आपसी सहयोग, साम्प्रदायिक–सद्भाव, लोकमंगल का विधान, पर्यावरण सुधार और नैतिक मूल्य ही इसकी सही जमीन सिद्ध होगे। सहज विकास की दिषा को सुनिष्चित करके ही हम षिक्षा का भविष्य और 'भविष्य की षिक्षा' को सार्थक बना सकते है।

विकास के अवसर :– बच्चे स्वभाव से जिज्ञासु होते है। वे जो देखते है, अनुभव करते है तथा समाज में जिसके संपर्क में आते है, उनके संबंध में बहुत अधिक प्रश्न पूछते है। वे जितने प्रश्न पूछेगें, उनके व्यक्तित्व का विकास उतना ही अधिक होगा। हम यह भली प्रकार जानते है कि प्रत्येक उन्नतिशील कदम के पीछे, जिज्ञासु मस्तिष्क होता है। इसलिये शिक्षक प्रत्येक बच्चे से प्रश्न पूछते है और खोज करने तथा रचनात्मक कार्य करने के भरपूर अवसर प्रदान करते है। ताकि उनका उत्तरोतर विकास हो।

पाठ्य सामग्री का निर्माण एवं विकास ही इस प्रकार हो कि जिसके द्वारा विद्यार्थियों में स्वतः ही जिज्ञासा, स्वतन्त्र रूप से ज्ञान प्राप्त करने की ललक तथा वैज्ञानिक रूचि जाग्रत होती है। बच्चों में जिज्ञासावृद्धि को बनाये रखना भी शिक्षकों के लिए आवश्यक है। शिक्षक कक्षा में प्रश्न आमंत्रित करते है। जिज्ञासा–विकास के लिये अध्यापन के अनेक तरीके है। कहानी के माध्यम से पढाने की विधि का

अवलोकन करने से पता चलता है कि इस विधि से विद्यार्थी अपनी शिक्षा पर अधिक ध्यान देता है। शिक्षा में जिज्ञासा के अवसर अधिकाधिक प्रदान करें। यही सच्ची शिक्षा का सही मार्ग है।

अध्ययन क्षेत्र

राजस्थान के मरूस्थल की गोद में बसा बीकानेर अपने ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के लिए विख्यात है। इसके साथ यहाँ पर अभिलेखागार, म्यूजियम, भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, संस्कृत पुस्तकालय भी है। रेगिस्तान का जहाज कहा जाने वाला ''ऊँट'' यहाँ बहुतायत से पाये जाते है। यहाँ राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र भी स्थित है।

बीकानेर नगर की स्थापना जोधपुर नरेश राव जोधाजी के पुत्र राव बीकाजी ने सन् 1488 में की थी। बीकाजी ने एक खाली स्थान जो कि ''जांगल प्रदेश'' के नाम से जाना जाता था, को चुना और इसे ऐसा स्वरूप प्रदान किया जिसे आज इसके संस्थापक के नाम से अर्थात् बीकानेर के नाम से जाना जाता है। बीकानेर शहर आज जहाँ बसा हुआ है वह स्थान पहले ''राती घाटी'' के नाम से जाना जाता था। बीकानेर शहर एक परकोटे से घिरा हुआ है, जिसमें नगर प्रवेश हेतु पांच द्वार (कोटगेट, जस्सुसर गेट, नत्थूसर गेट, शीतला गेट और गोगागेट) है और इनमें से कोटगेट एक विशाल एवं उत्कृष्ट द्वार है।

WIKIPEDIA
The Free Encyclopedia

विगत कुछ वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में बीकानेर ने अपना अत्यन्त लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। बीकानेर राज्य में शिक्षा के केन्द्र के रूप में तेजी से विकसित हो रहा है तथा शिक्षार्थियों को मूल तथा उच्च शिक्षा प्रदान कर रहा है। लगभग सभी विषयों में यहाँ बडी संख्या में विद्यालय तथा महाविद्यालय है। जो यहाँ के लोगों की शिक्षा संबंधी जरूरतों को पूरा करते हैं। सन् 1991 में बीकानेर में साक्षरता दर 41.73 प्रतिशत थी, सन् 2001 में बढ़कर 57.54 प्रतिशत हो गई और वर्तमान (2011) में यह बढ़कर 65.92 प्रतिशत हो गई है।

उद्देश्य

1. बीकानेर शहर के विद्यालयों की संख्या में वृद्धि का अध्ययन।
2. बीकानेर शहर के विद्यालयों में प्रति वर्ष छात्र–छात्राओं के नामांकन में वृद्धि एवं छात्रों के ठहराव में सुधारों का अध्ययन करना।
3. विद्यालयों में अध्यापकों की उपलब्धि की जानकारी, उनकी व्यवसायिक एवं शैक्षणिक योग्यताओं का पता लगाना।
4. विद्यार्थियों की शिक्षा के विकास के लिए किये गये विभिन्न सरकारी प्रयासों का अध्ययन करना।
5. शिक्षा को बढाने या विकास के लिए जिन योजनाओं का संचालन किया जा रहा है, उनका अवलोकन करना।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

अध्ययन विधि

विद्यालयों की संख्या :–

तालिका – प्राथमिक / उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या

वर्ष	राजकीय	सहायता प्राप्त	गैर सरकारी
2007	99	263	41
2006	99	263	41
2005	89	244	38
2004	89	244	38
2003	86	242	32
2002	86	242	32
2001	66	157	29
2000	66	157	29
1999	57	143	23
1998	57	128	23
1997	52	121	20

ADVANCED SCIENCE INDEX

INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

आरेख

प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या वर्ष 1997, वर्ष 2007

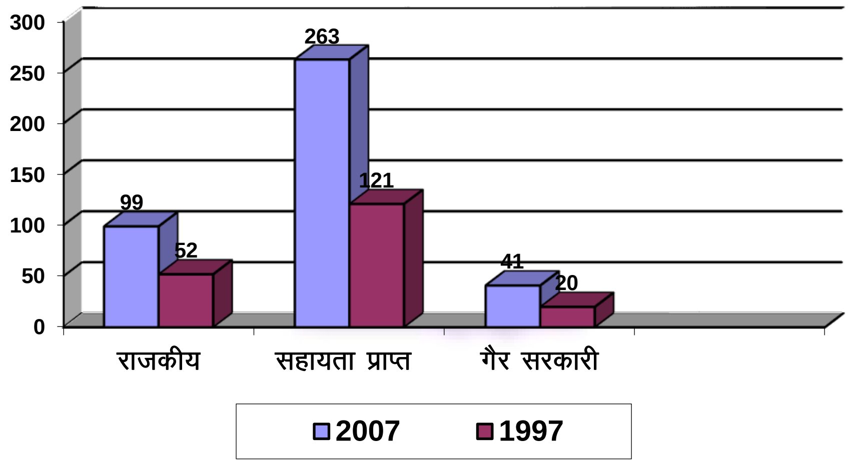

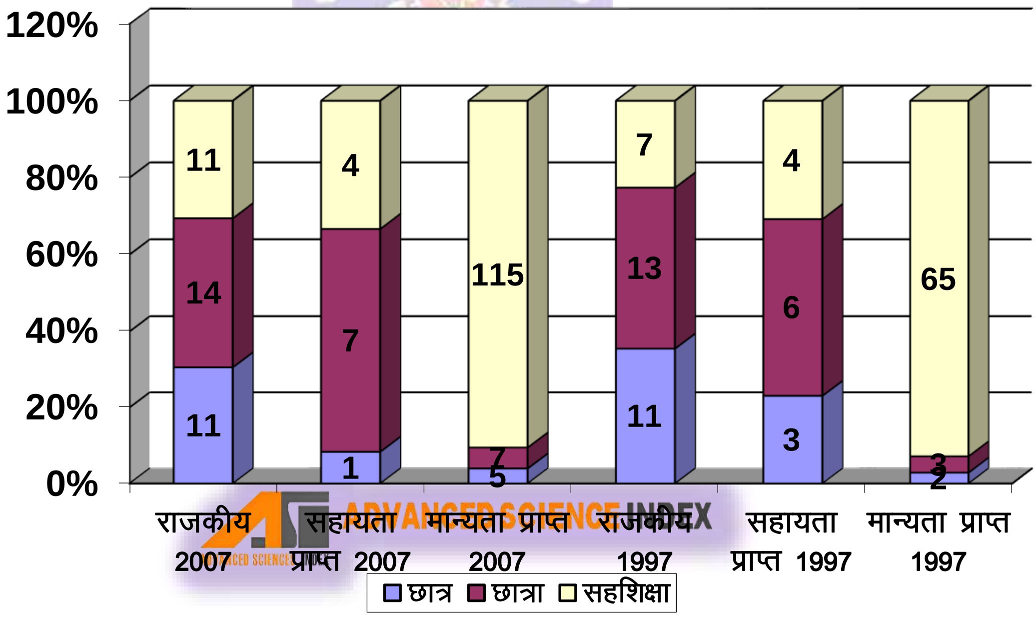

तालिका – केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड – विद्यालयों की संख्या

वर्ष	विद्यालयों की संख्या
2007	11
2006	11
2005	11
2004	11
2003	10
2002	10
2001	10

INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

2000	10
1999	7
1998	7
1997	7

आरेख

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड विद्यालयों की संख्या वर्ष 1997, वर्ष 2007

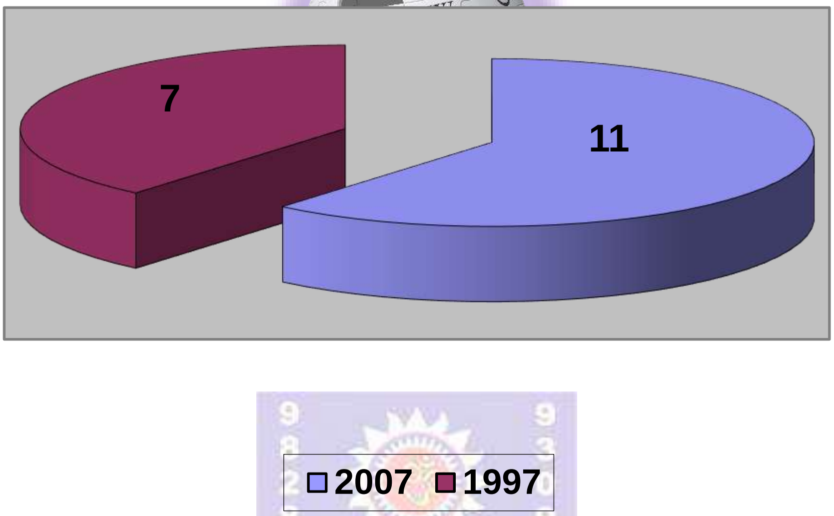

निष्कर्ष एवं सुझाव

''शिक्षा वह दर्पण है जिसके माध्यम से किसी देश का वास्तविक चेहरा दिखाई देता है अर्थात् किसी भी देश की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए उस देश की शिक्षा व्यवस्था की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।''

— जार्ज जेड एफ बीयरर्ड

- विद्यालय में बालक—बालिकाओं का अधिकतम ठहराव सुनिश्चित करने के लिए हमें कक्षा को आकर्षक बनाना और गतिविधि आधारित शिक्षण व्यवस्था करनी चाहिए और शौचालय, पीने के पानी की सुविधा विशेष रूप से बालिका विद्यालयों के लिए उपलब्ध कराना, विद्यालयों में ठहराव दर बढाने हेतु मिड—डे—मील योजना का प्रारंभ होना ही शिक्षा के स्तर को सुधारा जा सकता है।
- प्रौढ शिक्षा विशेषकर महिला प्रौढ शिक्षा को गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से बढाया जाये अन्यथा इस कार्य के लिए प्राप्त हो रही विदेशी सहायता रुक जायेगी तथा हम महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पायेंगे।
- सरकार को चाहिए कि जनजातीय क्षेत्र में 1 से 5 कक्षा तक के अधिक से अधिक विद्यालय खोले जायें इन विद्यालयों में अनौपचारिक शिक्षा पर अधिक ध्यान दें तथा विद्यालय समुदाय विशेष की आवश्यकता के अनुरूप होना चाहिए।
- सामाजिक संस्थाओं द्वारा और भी अधिक विद्यालयों को गोद लिया जाना चाहिए ताकि वह विद्यालयों की मूलभूत समस्याओं को दूर कर सकें तथा विद्यालय विकास व छात्र विकास के साथ शिक्षा प्रक्रिया में अपना योगदान दे सकें।
- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए नवीन शिक्षण विधियों, नवीन सहायक शिक्षण सामग्री जैसे प्रदर्शनियों, बाल मेलों व स्वास्थ्य मेलों आदि का शैक्षिक प्रक्रिया में समावेश किया जाना चाहिए।

- शिक्षा का सार्वजनीकरण किया जाए सार्वजनीकरण का तात्पर्य है शिक्षा को सर्वजन तक पहुंचाना ताकि अधिक से अधिक लोग शिक्षा से जुड़ पायें व शिक्षा के सार्वजनीकरण के द्वारा वह वंचित वर्ग षिक्षा को अपना सके जो अभी तक शिक्षा से दूर है।

संदर्भ सूची

1. एस.डी जोशी : सफल विद्यालय, प्रकाशन – राजस्थानी ग्रंथागार, सोजती गेट, जोधपुर
2. मुनीस रजा : शिक्षा और विकास के सामाजिक आयाम
3. सुशील कुमार शर्मा : शिक्षा के नए सरोकार, प्रकाशन – शिक्षा विभाग, राजस्थान
4. सिंह, जगत : बालक और अभिभावक, प्रभात प्रकाशन
5. मित्तल, एम.एल. : शिक्षा सिद्धान्त
6. श्रीमती कुसुम नारायण : सामाजिक मानव शास्त्र
7. बिस्त आभारानी : प्रगत षिक्षा मनोविज्ञान
8. डॉ. सिंह, आर.पी. : बाल विकास के मनोवैज्ञानिक आधार

पत्र–पत्रिकाएँ

1. राजस्थान का विकास : द्वैमासिक पत्रिका
2. शिविरा पत्रिका : मासिक पत्रिका
3. योजना : मासिक पत्रिका
4. दैनिक समाचार पत्र : राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर
5. सामान्य अध्ययन : भारतीय अर्थव्यवस्था (2006) अतिरिक्तांक
6. प्रतियोगिता दर्पण (हिन्दी मासिक)
7. कुरूक्षेत्र : मासिक पत्रिका
8. राजस्थान सुजस : द्वैमासिक पत्रिका